समकालीन भारतीय कला

पहुंची ग्रामीण अमेरिका

नए इंडिया स्टडी कार्यक्रम की शुरुआत के मौके पर खास कला प्रदर्शनी का कनेटिकट विश्वविद्यालय में आयोजन

कैथरीन मायर्स

कनेटिकट विश्वविद्यालय के विलियम बेंटन कला संग्रहालय ने पिछले कुछ सालों के दौरान अपने स्थायी संग्रह के लिए समकालीन भारतीय कलाकारों, भारतीय विरासत वाले कलाकारों और भारत की कला और संस्कृति से प्रभावित पश्चिमी कलाकारों की कलाकृतियों को हासिल किया है। वर्ष 2006 के पतझड़ में ये सब कलाकृतियां *भारत: दूरियों में नज़दीकियों के स्वर* नामक प्रदर्शनी में प्रदर्शित की गई हैं। इनमें से कुछ वर्ष 2004 में बेंटन में *मसाला: दक्षिण एशियाई कला में विविधता और लोकतंत्र* नामक प्रदर्शनी में प्रदर्शित की गई थीं। इसमें समकालीन, लोक और लोकप्रिय कला की 200 कलाकृतियां शामिल थीं। कला और कला इतिहास विभाग से संबंधित कला-संरक्षक होने के नाते मेरे लिए यह विशेष बात थी कि इन दोनों प्रदर्शनियों को आयोजित करने का मौका मुझे मिला। यह संग्रह और समृद्ध होता जा रहा है। इन प्रदर्शनियों ने आगे और ज़्यादा कलाकृतियों को हासिल करने का रास्ता खोला है।

यह कला प्रदर्शनी कनेटिकट विश्वविद्यालय में इंडिया स्टडी प्रोग्राम की शुरुआत का जश्न भी बन गई। इंडिया स्टडीज के तहत ऐसे व्याख्यान आयोजित किये जाते हैं, जिनमें भारत और अमेरिका के विभिन्न विद्वान और कलाकार हमारे ग्रामीण परिसर में आते हैं। *द इंडियन स्टडीज माइनर नया* लघु वैकल्पिक पाठ्यक्रम है जो कई

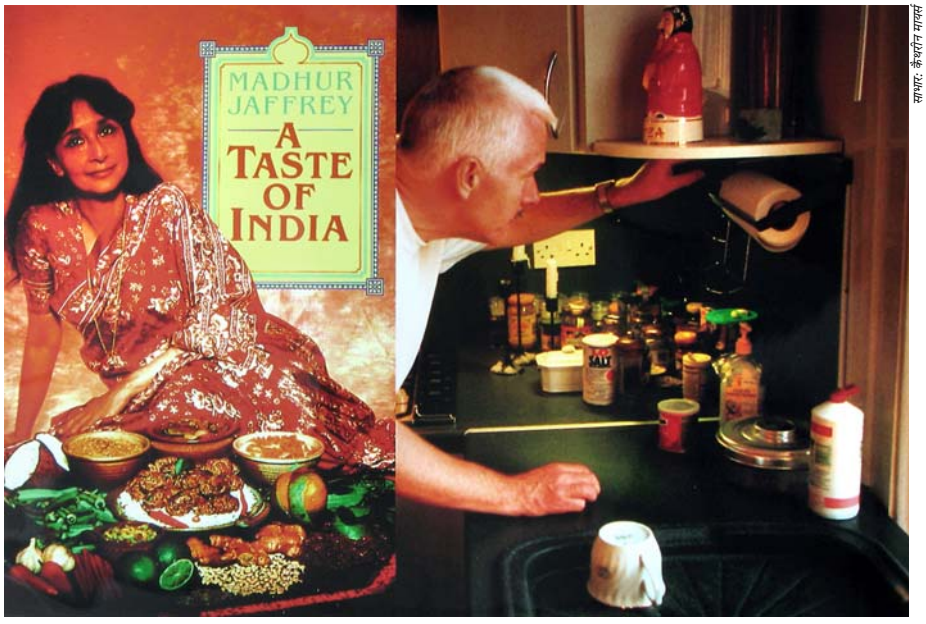

साभार: कैथरीन मायर्स

सुनील गुप्ता, *शीर्षक नहीं # 2, ट्रेसपास शृंखला से, इंक जेट प्रिंट, 1993*

विजय कुमार,
शीर्षक नहीं # 16, इंडिया पोर्टफोलियो से
न्यूजप्रिंट पर इनटैलियो प्रिंट

इंद्रप्रमित राय
यूरीपाइड्स द बेके
ऑफ़सेट लिथोग्राफ चित्रांकन, 2004
गेट्टी म्यूज़ियम, लॉस एंजिलिस से प्राप्त

अनुपम सूद, *रियर विंडो, इचिंग, 2001*

तरह के अनुशासनों के पाठ्यक्रमों को समाहित करता है और नए पाठ्यक्रमों में मदद करता है। इसमें वह पाठ्यक्रम शामिल है, जो मैंने समकालीन भारतीय कला पर विकसित किया है।

कला प्रदर्शनी का मुख्य उद्देश्य यह दिखाना था कि भारत ने अलग-अलग इतिहास और स्थानों के समकालीन कलाकारों के लिए कैसे जिज्ञासा और शोध के स्रोत का काम किया है, ऐसी कला जो भौगोलिक और भावनात्मक सीमाओं के बारे में सवाल उठाती है। प्रदर्शनी से जुड़े कलाकारों और पूरी दुनिया के कलाकारों के लिए, संस्कृतियों और सीमाओं के दायरे से परे संपर्क स्थापित करने वाले इस तरह के प्रयास दिलचस्प अन्वेषण और बेहतरीन कलाकृतियों के नतीजे के रूप में सामने आए हैं।

भारत में रहने और काम करने वाले जिन कलाकारों को बेंटन संग्रहालय के संग्रह में प्रतिनिधित्व मिला था, उनमें हनुमान कांबली, माधवी पारिख, इंद्रप्रमित राय और अनुपम सूद शामिल थे। अपनी विविध कला-पद्धतियों और शैलियों के जरिये वे पूरे विश्व और स्थानीय मसलों से रूबरू हुए। साथ ही साथ उन्होंने पूरब और पश्चिम की कला के ऐतिहासिक स्रोतों की बहुलता की गहराई को तलाशने की कोशिश की।

गोवा के बाशिंदे कांबली अपनी कलाकृतियों को मानवीय रिश्तों को परिभाषित करने और उनकी बेचैनी और विरोधाभासों को व्यक्त करने का उपयुक्त माध्यम मानते हैं। *डायलाग* तृतीय नामक अपनी कलाकृतियों में वह उन गतिविधियों और शब्दों पर विचार करते हैं, जो व्यापक वैश्विक मंच के परिप्रेक्ष्य में अंतरंग संबंधों में मानवीय व्यवहार के तमाम पहलुओं को उजागर करते हैं। लोगों के बदलते चेहरों, उनकी मनस्थितियों, व्यवहार और कार्यों को चित्रित करने के जरिये वह उस दोहरेपन और विरोधाभासों से जूझते हैं जो हमारे कहने और करने के टकराव में पाए जाते हैं। कांबली गोवा कॉलेज ऑफ आर्ट में प्रिंटमेकिंग के प्रमुख हैं। उन्हें 1999 में अमेरिका जाने के लिए फुलब्राइट फ़ेलोशिप मिली थी।

व्यक्तिगत और राजनीतिक आवरण पेश करने वाले प्रिंटमेकर और चित्रकार अनुपम सूद की इनटैलियो यानी उत्कीर्ण आकृति *रीयर विंडो* मानवीय हालात के बारे में है जो व्यक्तिगत सरोकारों से गहराई से ताल्लुक रखती है, साथ में यह सूक्ष्म राजनीतिक टिप्पणी भी करती है। वह उन लोगों के प्रति सहानुभूति भरी प्रतिक्रिया देती हैं जो बिगड़ते शहरी माहौल और खास तौर पर नई दिल्ली में वाकई समाज के हाशिये पर रहते हैं। हालांकि यह भारतीय शहर है, पर उनकी कला पर आधारित यह विश्व का कोई भी शहरी हिस्सा हो सकता है। उनकी आकृतियां आम तौर पर गंजे सिरों के साथ होती हैं, जो एक अनामपने और अकेलेपन का और बोध पैदा करती हैं, जो अपने आप से और अपने आसपास से कटी हुई हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था के तेज विस्तार से अमीरों और गरीबों के बीच खाई रोज बढ़ रही है। सूद की चिंताएं एक सतत दुविधा को पेश करती हैं। वह दिल्ली कॉलेज ऑफ आर्ट की प्रिंटमेकिंग की प्रमुख रही हैं।

हालांकि माधवी पारेख दिल्ली में कई साल रही हैं, लेकिन उनके काम की मुख्य प्रेरणा और औपचारिक प्रभाव उनका बचपन है जो उन्होंने उस ग्रामीण इलाके में गुजारा जहां उनके पिता स्थानीय विद्यालय में प्रिंसिपल थे। उनकी छवियां, जैसे जलरंग की एक बड़ी पेंटिंग मॉर्निंग लाइट फंतासी, अन्वेषणों और उनकी व्यक्तिगत ज़िंदगी की विशिष्ट कहानियों, उनके दोस्त, पड़ोसी और यात्राओं से ली गई हैं। उनके ज़्यादातर काम में वह औपचारिक

http://www.fulbright-india.org

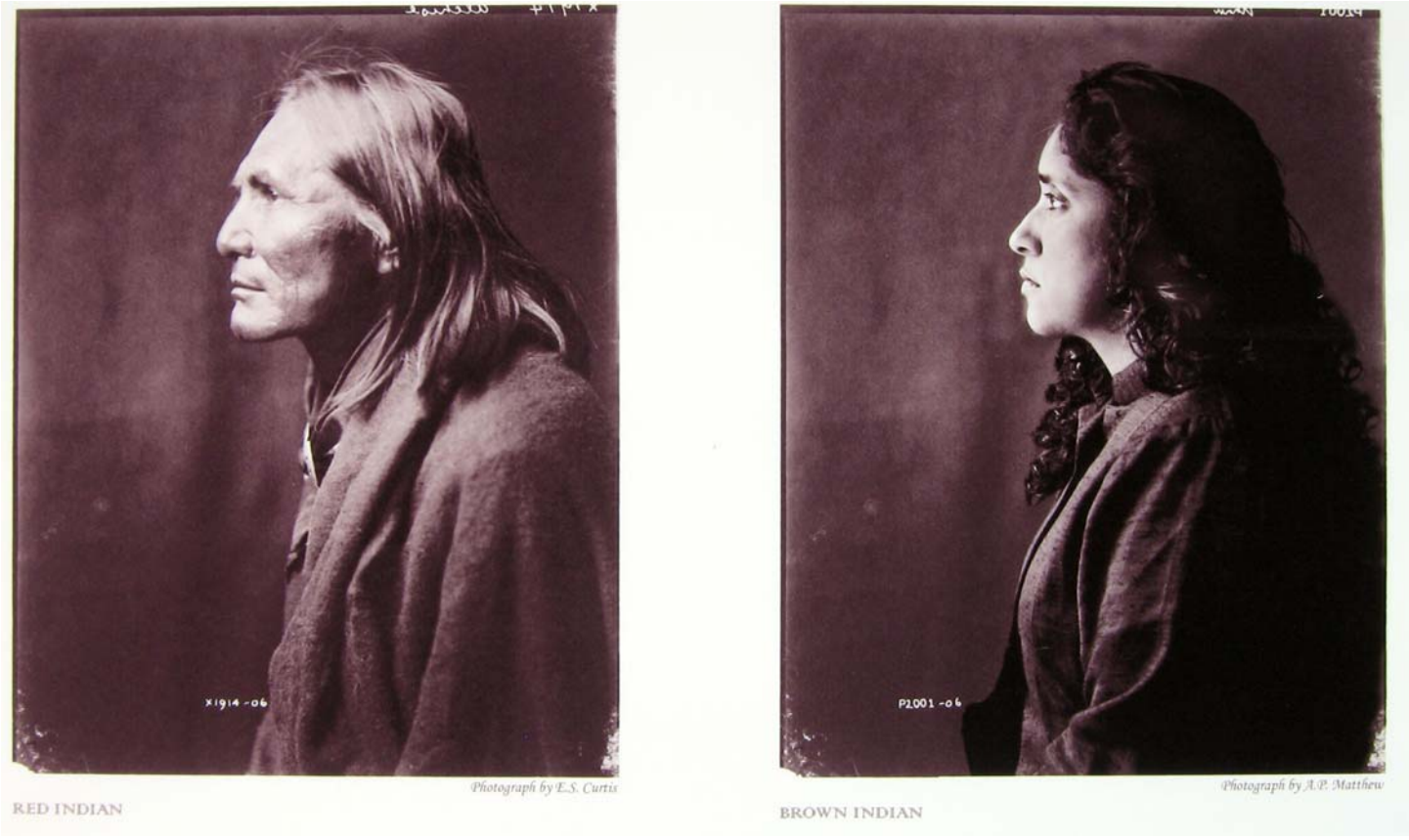

अन्नू पलकुन्नाथु मैथ्यू, *इंडिया-रेड से एक भारतीय, लुमिनेप डिजिटल प्रिंट*

रुपांकन है, जो लोक-कला की याद दिलाता है, जिसमें वहां के पैटर्न, बॉर्डर, प्रतिरुप आकृतियां और संरचनाएं हैं। हाल ही में उन्होंने अपने रंगपटल में मूर्तिकला को और जोड़ा है। इससे उनकी रहस्यमयी चित्र-भाषा की उपस्थिति का विस्तार होता है।

इंद्रप्रमित राय एक चित्रकार, पुस्तकों के लिए चित्र बनाने वाले और वडोदरा के एम. एस. विश्वविद्यालय में वरिष्ठ प्राध्यापक हैं। उनके चित्रों वाली चार किताबें कनेटिकट विश्वविद्यालय के थॉमस जे डॉड शोध केंद्र के विशेष संग्रह पुस्तकालय द्वारा ली गई हैं। गेटी इंस्टीट्यूट, लॉस एंजिलिस द्वारा प्रकाशित यूरीपाइड्स द बेके बेंटन संग्रहालय को इस प्रॉक्जिमिटीज कला प्रदर्शनी के लिए दी गई थी। किताबों की चित्रकारी राय को यह इज़ाजत देती है कि वह अपने चित्रकार के खोल से बाहर आ सकें और वह उन चीजों को तलाश सकें जो अपनी पेंटिंग में करने में समर्थ नहीं है, खास तौर पर सिल्वर स्क्रीन प्रक्रिया से जुड़ी चुनौतियां। उनके द्वारा चित्रित किताब राय को माध्यम प्रदान करती हैं जिसमें वह यूनानी प्रतीकों और चित्रकारी की पड़ताल कर सकें, खास तौर पर मिट्टी के पात्र जो राय को हमेशा प्रिय रहे हैं। राय वर्ष 2004 में फुलब्राइट स्कॉलर के बतौर अमेरिका में रहे हैं।

बहुसंस्कृतीय धागों में गुंथी अमेरिकी ज़िंदगी भारतीय कुनबे के कलाकारों को इस बात के ढेर से अवसर प्रदान करती है कि वे अमेरिकी और भारतीय संस्कृति और पहचान को असंख्य तरीकों और साधनों से देख सकें। कुछ कलाकार समांतर इतिहास और सार्थक मिलन बिंदुओं की खोज करते हैं, जबकि कुछ संस्कृतियों के दर्दनाक टकराव को अनुभव कर सकते हैं।

अमेरिका में आप्रवासी अन्नू पलकुन्नाथू मैथ्यू से सवाल पूछा जाता है कि वह दरअसल कहां से हैं, तो उन्हें अक्सर स्पष्टीकरण देना पड़ता है कि वह भारत से हैं और भारतीय हैं। अपनी प्रिंटकला शृंखला *इंडियन फ्रॉम इंडिया* में उन्होंने उन्नीसवीं शताब्दी के उन मूल अमेरिकियों के फोटो दिए हैं जो परंपरागत छवियों को सामने लाती है और उनके जबरन अनुकूलन को रेखांकित करती हैं। वह इन छवियों को अपनी वस्त्रों में लिपटी, विभिन्न मुद्राओं और परिवेश वाले चित्रों से जोड़ती हैं और ऐसा माहौल रचती हैं जो ऐतिहासिक छवियों को प्रस्तुत करता है और दर्शकों के स्थानीयता और भव्यता के आकलन को चुनौती देती है।

बेंटन के संग्रह में उनका ज़बर्दस्त डिज़िटल कोलाज बम शामिल है। यह बॉलीवुड सेटायराइज्ड शृंखला से है। यह वास्तविक फिल्मी पोस्टरों से शुरु होती है और वह अपनी छवियों और हास्यपरक और व्यंग्यात्मक टिप्पणियों को जोड़ने के लिए डिजिटल तकनीक का प्रयोग करती हैं जिसमें परंपरागत लैंगिक भूमिकाओं और व्यवहार पर सवाल उठाए जाते हैं। वह मैथ्यू रोड आइलैंड कालेज में फोटोग्राफी के एसोसिएट प्रोफ़ेसर हैं और बेंटन संग्रहालय की मसाला प्रदर्शनी के सह-संरक्षक थे।

सायोना बेंजामिन की विरासत कई जातीयताओं से जुड़ी हुई है। मुंबई से सेफार्डिक यहूदी के तौर पर उनकी पढ़ाई ईसाई स्कूलों में हुई, फिर वह अमेरिका में ग्रेजुएट स्कूल में आए और अब मोंटक्लेयर, न्यू जर्सी में रहते हैं। यह सारा सिलसिला उनके कई तरह के कला प्रभावों, अक्सर विरोधाभासी, के बारे में स्पष्ट करता है। बेंजामिन मिनिएचर पेंटिंग की तकनीकों का प्रयोग करते हैं। उसमें ईसाई, मुस्लिम, यहूदी और हिंदू परंपराओं की प्रतीकात्मक चित्रात्मकता का समावेश करते हैं। हास्य, व्यंग्य, रुपक, करुणा के कई सारे रास्तों के माध्यम से वह उन जटिल रेशों की पड़ताल करते हैं, व्याख्या करते हैं और उनके बारे में सवाल उठाते हैं, जो उनके लगातार बदलते आत्मबोध के आधार हैं। उनकी गोऊ च पेंटिंग बेंटन संग्रह में है जिसका नाम है हगार। यह परंपरागत हिब्रू कहानी की व्यक्तिगत व्याख्या है। बेंजामिन की छवि के अनुसार हगार,

माधवी पारेख, *मॉर्निंग लाइट, कागज़ पर जलरंग, 2001*

हनुमान कांबली, *डायलॉग तृतीय, कागज पर एक्रिलिक, 2001*

मिस्र की हैंडमेडन थी, जो अपनी क्रूर मालकिन से दूर भाग जाती है और जो रेगिस्तान में मरने के लिए तैयार है, वह पानी से घिरी हुई है जिसमें नए सिरे से आध्यात्मिकता लाने की गुंजाइश नहीं है। दरअसल यह पानी पीने योग्य नहीं है और इसमें एक आत्मघाती मानव बम के टुकड़े बिखरे हैं। सायोना बेंजामिन भी बेंटन संग्रहालय की मसाला प्रदर्शनी की संह-संरक्षक थीं।

मुस्लिमों और हिंदुओं के बीच की सांप्रदायिक हिंसा, खास तौर पर अयोध्या की बाबरी मस्जिद के विध्वंस के बाद हुई हिंसा, ब्रुकलिन न्यू यॉर्क के कलाकार विजय कुमार के सशक्त इंडिया पोर्टफोलियो में है। अखबारों की कतरनों और अपरिष्कृत तरीके से बनाई गई आकृतिमूलत छवियां ग्राफिटी यानी दीवारों पर दर्ज़ कला की याद दिलाती हैं। कुमार उस दर्द को दिखाने की कोशिश करते हैं जो अपनी प्यारी जन्मभूमि में होने वाले सतत संघर्ष से उन्हें होता है। वह भारत नियमित जाते हैं, पर वह तीस सालों से ज़्यादा भारत से दूर रह रहे हैं। कुमार प्रिंटमेकर हैं और मनहट्टन ग्राफिक्स सेंटर के संस्थापक सदस्यों में से एक हैं।

सुकन्या रहमान कलाकार होने के साथ-साथ एक श्रेष्ठ नृत्यांगना भी हैं। वह मेन के ऊर आइसलैंड में अपने नाटक लेखक पति के साथ रहती हैं। उनके शैडो बॉक्स कोलाज में भारतीय और पश्चिमी कला की छाप दिखाई देती है। कैलेंडर कला, बॉलीवुड और हॉलीवुड फिल्म पत्रिकाओं जैसे आधुनिक और पुराने जनप्रिय माध्यमों से ली गई उनकी आकृतियों के कट-आउट और स्टेज जैसे लगने वाले दृश्यों में पूरब और पश्चिम तथा उच्च और निम्न का संगम मिलता है। उनके काम में समकालीन समाज और खास तौर पर भारत और अमेरिका के शहरी इलाकों के भ्रमों और टकराव का नाट्यीकरण होता है, जहां धार्मिक और धर्म-निरपेक्ष, प्राचीन और समकालीन साथ-साथ मौजूद रहते हैं।

आंध्र प्रदेश के बारी कुमार की प्रशंसित पेंटिंग में भी पूरब और पश्चिम एक साथ मौजूद हैं और खास तौर पर अपने निवास स्थल लॉस एंजिलिस, कैलिफोर्निया के एशियाई और लैटिन समुदायों की जीवंत सड़क संस्कृति वहां मौजूद है। कुमार लॉस एंजिलिस और न्यू यॉर्क के पार्सन्स स्कूल ऑफ़ डिज़ाइन में प्रशिक्षित हुए हैं और उन लोगों को निरुत्साह कर देते हैं जो उनके काम में प्रतीकवाद को एक आयामी तरीके से देखने की कोशिश करते हैं। विभिन्न प्रतीक कुमार के लिए बहते स्वरूप जैसे हैं और जब सीमाएं पारगम्य हों तो उन्हें बहुत सी चीज़ें दिखाने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। उनके चित्रों में धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व की छवियां हैं जिन्हें बार-बार देखने का आकर्षण रहता है। कुमार के अनुसार उनका व्यक्तिगत अनुभव कभी-कभार सामाजिक-राजनीतिक टिप्पणी में तब्दील हो जाता है। उदाहरण के लिए बेंटन संग्रह की उनकी पेंटिंग गुड लक अपने परिवार में महिलाओं की उम्मीदों के बारे में बताती है, लेकिन यह हर जगह की स्त्री की दशा के बारे में भी है।

कनेटिकट का विलियम बेंटन कला संग्रहालय तरह-तरह के माध्यमों के जरिये विविध संस्कृतियों की कला को प्रस्तुत करने में जुटा है। यह संग्रहालय भारत की कला के महत्व और विश्व मंच पर भारत के लगातार बढ़ते महत्व को जानता है और यह उन नई कलाकृतियों को हासिल कर रहा है जिनके केंद्र में समकालीन भारत है। मुझे खुशी है कि मुझे यह मौका मिला कि मैं भारत पर अपने शोध और भारत से प्यार को अपने छात्रों, सहकर्मियों और समुदाय के साथ बांट पाई। मैं कला निर्देशकों के विलियम बेंटन संग्रहालय, पूर्व निदेशक सैल्वाटोर स्केलोरा और वर्तमान निदेशक स्टीवन केर्न को इस प्रयास में उनके सतत समर्थन और लगातार दिलचस्पी के लिए धन्यवाद देती हूं।

सायोना बेंजामिन, *फाइंडिंग होम # 64, हगार, गोऊच एंड गोल्ड लीफ़, 2001*

कैथरीन मायर्स *चित्रकार हैं और स्टोर्स के कनेटिकट विश्वविद्यालय में कला प्रोफ़ेसर हैं। उन्हें वर्ष 2002 में भारत जाने के लिए फुलब्राइट फ़ेलोशिप मिली थी। हाल में वडोदरा के एम.एस. विश्वविद्यालय और फनडेकाओ ओरियंट, गोवा में उनकी कलाकृतियों की प्रदर्शनी आयोजित हुई।*